अकाल उसतति

ੴ १ओंकार सतिगुर प्रसादि

स्री भगउती जी सहाइ

उतार खासे दसखत का । पातिसाही १०।

अकाल पुरख की रछ्छा हमनै । सरब लोह की रछिआ हमनै ।

सरब काल जी दी रछिआ हमनै । सरब लोह जी दी सदा रछिआ हमनै ।

आगे लिखारी के दसखत

त्वप्रसादि । चउपई

प्रणवे आदि एकंकारा । जल थल महीअल कीओ पसारा ।

आदि पुरुख अबगति अबिनासी । लोक चत्र दसि जोत प्रकासी ।१।

हसति कीट के बीच समाना । राव रंक जिह इकसर जाना ।

अद्वै अलख पुरख अबिगामी । सभ घट घट के अंतरजामी ।२।

अलख रूप अछै अनभेखा । राग रंग जिह रूप न रेखा ।

बरन चिहन सभहूं ते निआरा । आदि पुरख अद्वै अबिकारा ।३।

बरन चिहन जिह जाति न पाता । सत्र मित्र जिह तात न माता ।

सभ ते दूरि सभन ते नेरा । जलि थलि महीअलि जाहि बसेरा ।४।

अनहद रूप अनाहद बानी । चरन सरनि जिह बसत भवानी ।

ब्रहमा बिसनु अंतु नही पाइओ । नेति नेति मुख चार बताइओ ।५।

कोटि इंद्र उपइंद्र बनाए । ब्रहम रुद्र उपाइ खपाए ।

लोक चत्र दस खेल रचाइओ । बहुरि आप ही बीच मिलाइओ ।६।

दानव देव फनिंद अपारा । गंध्रब जछ्छ रचे सुभ चारा ।

भूत भविख भवान कहानी । घट घट के पट पट की जानी ।७।

तात मात जिह जाति न पाता । एक रंग काहूं नहि राता ।
सरब जोति के बीच समाना । सभहूं सरब ठौरि पहिचाना ।८।
काल रहित अनकाल सरूपा । अलख पुरुख अविगति अवधूता ।
जाति पाति जिह चिहन न बरना । अबिगति देव अछै अनभरमा ।९।
सभ को काल सभन को करता । रोग सोग दोखन को हरता ।
एक चित जिह इक छिन धिआइओ । काल फासि के बीच न आइओ ।१०।

त्वप्रसादि । कबित
कतहूं सुचेत हुइ कै चेतना को चारु कीओ
कतहूं अचिंत हुइ कै सोवत अचेत हो ।
कतहूं भिखारी हुइ कै मांगत फिरत भीख
कहूं महा दानि हुइ कै मांगिओ धन देत हो।
कहूं महा राजन को दीजत अनंत दान
कहूं महा राजन ते छीन छित लेत हो ।
कहूं बेदि रीति कहूं ता सिउ बिपरीति

कहूं त्रिगुन अतीत कहूं सरगुन समेत हो ।१।११।
कहूं जछ्छ गंध्रब उरग कहूं बिदिआधर
कहूं भए किंनर पिसाच कहूं प्रेत हो ।
कहूं होइ कै हिंदूआ गाइत्री को गुपत जपिओ
कहूं होइ के तुरका पुकारे बांग देत हो ।
कहूं कोक काबि हुइ कै पुरान को पड़त मति
कतहूं कुरान को निदान जान लेत हो ।
कहूं बेद रीत कहूं ता सिउ बिपरीत
कहूं त्रिगुन अतीत कहूं सरगुन समेत हो ।२।१२।
कहूं देवतान के दिवान मै बिराजमान
कहूं दानवान को गुमान मति देत हो ।
कहूं इंद्र राजा को मिलत इंद्र पदवी सी
कहूं इंद्र पदवी छपाइ छीन लेत हो ।
कतहूं बिचार अबिचार को बिचारत हो
कहूं निज नारि परनारि के निकेत हो ।
कहूं बेद रीति कहूं तां सिउ बिपरीत
कहूं त्रिगुन अतीत कहूं सरगुन समेत हो ।३।१३।
कहूं ससत्र धारी कहूं बिदिआ के बीचारी

कहूं मारुत अहारी कहूं नार के निकेत हो ।
कहूं देवबानी कहूं सारदा भवानी
कहूं मंगला म्रिड़ानी कहूं सिआम कहूं सेत हो ।
कहूं धरम धामी कहूं सरब ठउर गामी
कहूं जती कहूं कामी कहूं देत कहूं लेत हो ।
कहूं बेद रीति कहूं ता सिउ बिपरीत
कहूं त्रिगुन अतीत कहूं सरगुन समेत हो।४।१४।
कहूं जटाधारी कहूं कंठी धरे ब्रहमचारी
कहूं जोग साधी कहूं साधना करत हो ।
कहूं कान फारे कहूं डंडी हुइ पधारे
कहूं फूकि फूकि पावन कौ प्रिथी पै धरत हो ।
कतहूं सिपाही हुइ कै साधत सिलाहन कौ
कहूं छत्री हुइ कै अरि मारत मरत हो ।
कहूं भूमि भार कौ उतारत हो महाराज
कहूं भव भूतन की भावना भरत हो ।५।१५।

कहूं गीत नाद के निदान कौ बतावत हो
कहूं न्रितकारी चित्रकारी के निधान हो ।
कतहूं पयूख हुइ कै पीवत पिवावत हो
कतहूं मयूख ऊख कहूं मदि पानि हो ।
कहूं महा सूर हुइ कै मारत मवासन कौ
कहूं महादेव देवतान के समान हो ।
कहूं महादीन कहूं द्रब के अधीन
कहूं बिदिआ मै प्रबीन कहूं भूमि कहूं भानु हो ।६।१६।
कहूं अकलंक कहूं मारुत मयंक
कहूं पूरन प्रजंक कहूं सुधता की सार हो ।
कहूं देव धरम कहूं साधना के हरम
कहूं कुतसति कुकरम कहूं धरम के प्रकार हो ।
कहूं पउनहारी कहूं बिदिआ के बीचारी
कहूं जोगी जती ब्रहमचारी नर कहूं नारि हो ।
कहूं छत्रधारी कहूं छाला धरे छैल भारी
कहूं छकवारी कहूं छल के प्रकार हो ।७।१७।

कहूं गीत के गवय्या कहूं बेनु के बजय्या
कहूं न्रित के नचय्या कहूं नर को अकार हो ।

कहूं बेद बानी कहूं कोक की कहानी
कहूं राजा कहूं रानी कहूं नारि के प्रकार हो ।
कहूं बेन के बजय्या कहूं धेन के चरय्या
कहूं लाखन लवय्या कहूं सुंदर कुमार हो ।
सुधता की सान हो कि संतन के प्रान हो
कि दाता महा दानि हो कि त्रिदोखी निरंकार हो ।८।१८।

निरजुर निरूप हो कि सुंदर सरूप हो
कि भूपन के भूप हो कि दाता महा दान हो ।
प्रान के बचय्या दूध पूत के दिवय्या
रोग सोग के मिटय्या किधौ मानी महा मान हो ।
बिदिआ के बिचार हो कि अद्वै अवतार हो
कि सिधता की सूरति हो कि सुधता की सान हो ।
जोबन के जाल हो कि काल हूं के काल हो
कि सत्रन के सूल हो कि मित्रन के प्रान हो ।९।१९।

कहूं ब्रहमबाद कहूं बिदिआ को बिखाद
कहूं नाद के निनाद कहूं पूरन भगत हो ।
कहूं बेद रीति कहूं बिदिआ की प्रतीति
कहूं नीति अउ अनीति कहूं ज्वाला सी जगत हो ।
पूरन प्रताप कहूं इकाती को जाप कहूं
ताप को अताप कहूं जोग ते डिगत हो ।
कहूं बर देत कहूं छल सो छिनाइ लेत
सरब कालि सरब ठौरि एक से लगत हो ।१०।२०।

त्वप्रसादि । स्वैये

स्त्रावग सुध्ध समूह सिधान के देखि फिरिओ घरि जोग जती के ।
सूर सुरारदन सुध्ध सुधादिक संत समूह अनेक मती के ।
सारे ही देस को देखि रहियो मत कोऊ न देखीअत प्रान पती के ।
स्त्री भगवान की भाइ क्रिपा हूं ते एक रती बिनु एक रती के ।१।२१।

माते मतंग जरे जर संगि अनूप उतंग सुरंग सवारे ।
कोटि तुरंग कुरंग से कूदत पउन के गउन को जात निवारे ।
भारी भुजान के भूप भली बिधि निआवत सीस न जात बिचारे ।

एते भए तो कहा भए भूपति अंत कै नांगे ही पांइ पधारे ।२।२२।
जीत फिरे सभ देस दिसान को बाजत ढोल म्रिदंग नगारे ।
गुंजत गूड़ गजान के सुंदर हिंतसत हैं हय राज हजारे ।
भूत भविख्ख भवान के भूपत कउन गनै नहीं जात बिचारे ।
स्त्री पति स्त्री भगवान भजे बिनु अंत को अंत के धाम सिधारे ।३।२३।

तीरथ न्हान दइआ दम दान सु संजम नेम अनेक बिसेखे ।
बेद पुरान कतेब कुरान ज़मीन ज़मान सबान के पेखे ।
पउन अहार जती जत धारि सबै सु बिचार हजारक देखे ।
स्त्री भगवान भजे बिनु भूपति एक रती बिनु एक न लेखै ।४।२४।

सुध्ध सिपाही दुरंत दुबाह सु साजि सनाह दुरजान दलैंगे ।
भारी गुमान भरे मन मै कर परबत पंख हलै न हलैंगे ।
तोरि अरीन मरोरि मवासन माते मतंगन मान मलैंगे ।
स्त्री पति स्त्री भगवान क्रिपा बिनु तिआगि जहानु निदान चलैंगे ।५।२५।

बीर अपार बडे बरिआर अबिचारहि सार की धार भछय्या ।
तोरत देस मलिंद मवासन माते गजान के मान मलय्या ।
गाड़े गड़ान को तोड़नहार सु बातन ही चक चार लवय्या ।
साहिबु स्त्री सभ को सिरनाइक जाचक अनेक सु एक दिवय्या ।६।२६।

दानव देव फनिंद निसाचर भूत भविख्ख भवान जपैंगे ।
जीव जिते जल मै थल मै पल ही पल मै सभ थाप थपैंगे ।
पुंन प्रतापन बाढि जैत धुनि पापन कै बहु पुंज खपैंगे ।
साध समूह प्रसंन फिरै जगि सत्र सभै अविलोक चपैंगे ।७।२७।

मानव इंद्र गजिंद्र नराधिप जौन त्रिलोक को राजु करैंगे ।
कोट इसनान गजादिक दानि अनेक सुअंबर साजि बरैंगे ।
ब्रहम महेसुर बिसनु सचीपति अंत फसे जम फासि परैंगे ।
जे नर स्त्री पति के प्रस हैं पग ते नर फेरि न देह धरैंगे ।८।२८।

कहा भयो दोऊ लोचन मूंद कै बैठि रहिओ बक ध्यान लगाइओ ।
न्हात फिरिओ लीए सात समुंद्रन लोक गइओ परलोक गवाइओ ।
बासु कीओ बिखिआन सो बैठ के ऐसे ही ऐस सु बैस बिताइओ ।
साचु कहौ सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभु पाइओ ।९।२९।

काहूं लै पाहन पूज धरियो सिर काहूं लै लिंगु गरे लटकाइओ ।
काहूं लखिओ हरि अवाची दिसा महि काहूं पछाह को सीसु निवाइओ ।
कोऊ बुतान को पूजत है पसु कोऊ म्रितान को पूजन धाइओ ।
कूर क्रिआ उरझिओ सभ ही जग स्त्री भगवान को भेदु न पाइओ ।१०।३०।

त्वप्रसादि । तोमर छंद

हरि जनम मरन बिहीन । दस चार चार प्रबीन ।
अकलंक रूप अपार । अनछिज तेज उदार ।१।३१।
अनभिज रूप दुरंत । सभ जगत भगत महंत ।
जस तिलक भू भ्रित भानु । दस चार चार निधान ।२।३२।

अकलंक रूप अपार । सभ लोक सोक बिदार ।
कल काल करम बिहीन । सभ करम धरम प्रबीन ।३।३३।
अनखंड अतुल प्रताप । सभ थापिओ जिह थाप ।
अनखेद भेद अछेद । मुखचार गावत बेद ।४।३४।

जिह नेति निगम कहंत । मुखचार बकत बिअंत ।
अनभिज अतुल प्रताप । अनखंड अमित अथाप ।५।३५।
जिह कीन जगत पसार । रचिओ बिचारि बिचारि ।
अनंत रूप अखंड । अतुल प्रताप प्रचंड ।६।३६।

जिह अंड ते ब्रहमंड । कीने सु चौदह खंड ।
सभ कीन जगत पसार । अबियकत रूप उदार ।७।३७।
कई कोटि इंद्र त्रिपार । कई ब्रहम बिसन बिचार।
कई राम क्रिसन रसूल । बिन भगति को न कबूल ।८।३८।

कई सिंध बिंध नगिंद्र । कई मछ्छ कछ्छ फनिंद्र ।
कई देवि आदि कुमारि । कई क्रिसन बिसन अवतार ।९।३९।
कई इंद्र बार बुहार । कई बेद अउ मुखचार ।
कई रुद्र छुद्र सरूप । कई राम क्रिसन अनूप ।१०।४०।

कई कोक काबि भणंत । कई बेद भेद कहंत ।
कई सासत्र सिंम्रिति बखान । कहूं कथत हि सु पुरान ।११।४१।
कई अगनहोत्र करंत । कई उरध ताप दुरंत ।
कई उरध बाहु संनिआस । कहूं जोग भेस उदास ।१२।४२।

कहूं निवली करम करंत । कहूं पउन अहार दुरंत ।
कहूं तीरथ दान अपार । कहूं जग करम उदार ।१३।४३।
कहूं अगनहोत्र अनूप । कहूं निआइ राज बिभूत ।
कहूं सासत्र सिंम्रित रीति । कहूं बेद सिउ बिप्रीति ।१४।४४।

कहूं देसि देसि फिरंत । कई एक ठौर इसथंत ।
कहूं करत जल महि जाप । कहूं सहत तन पर ताप ।१५।४५।
कहूं बास बनहि करंत । कहूं ताप तनहि सहंत ।
कहूं ग्रिहसत धरम अपार । कहूं राज नीति उदार ।१६।४६।

कहुं रोग रहत अभरम । कहूं करम करत अकरम ।
कहूं सेख ब्रहम सरूप । कहूं नीति राज अनूप ।१७।४७।
कहूं रोग सोग बिहीन । कहूं एक भगति अधीन ।
कहूं रंक राजकुमार । कहूं बेद बिआस अवतार ।१८।४८।
कई ब्रहम बेद रटंत । कई सेख नाम उचरंत ।
बैरागि कहूं सनिआसि । कहूं फिरति रूप उदासि ।१९।४९।
सभ करम फोकट जान । सभ धरम निहफल मान ।
बिनु एक नाम अधार । सभ करम भरम बिचार ।२०।५०।

त्वप्रसादि । लघुनराज छंद
जले हरी । थले हरी । उरे हरी । बने हरी ।१।५१।
गिरे हरी । गुफे हरी । छिते हरी । नभे हरी ।२।५२।
ईहा हरी । ऊहा हरी । जिमी हरी । जमा हरी ।३।५३।
अलेख हरी । अभेख हरी । अदोख हरी । अद्वैख हरी ।४।५४।

अकाल हरी । अपाल हरी । अछेद हरी । अभेद हरी ।५।५५।।
अजंत्र हरी । अमंत्र हरी । सुतेज हरी । अतंत्र हरी ।६।५६।

अजाति हरी । अपाति हरी । अमित हरी । अमात हरी ।७।५७।
अरोग हरी । असोग हरी । अभरम हरी । अकरम हरी ।८।५८।

अजै हरी । अभै हरी । अभेद हरी । अछेद हरी ।९।५९।
अखंड हरी । अभंड हरी । अडंड हरी । प्रचंड हरी ।१०।६०।

अतेव हरी। अभेव हरी । अजेव हरी । अछेव हरी ।११।६१।
भजो हरी । थपो हरी । तपो हरी । जपो हरी ।१२।६२।

जलस तुही । थलस तुही । नदिस तुही । नदस तुही ।१३।६३।
ब्रिसछ तुही । पतस तुही । छितस तुही । उरधस तुही ।१४।६४।

भजस तुअं । भजस तुअं । रटस तुअं । ठटस तुअं ।१५।६५।
जिमी तुही । जमा तुही । मकी तुही । मका तुही ।१६।६६।

अभू तुही । अभै तुही । अछू तुही । अछै तुही ।१७।६७।
जतस तुही । ब्रतस तुही । गतस तुही । मतस तुही ।१८।६८।

तुही तुही । तुही तुही । तुही तुही । तुही तुही ।१९।६९।
तुही तुही । तुही तुही । तुही तुही । तुही तुही ।२०।७०।

त्वप्रसादि । कबितु

खूक मलहारी गज गदाहा बिभूत धारी
गिदूआ मसान बास करिओई करत है ।
घुघू मटवासी लगे डोलत उदासी म्रिग
तरवर सदीव मोन साधे ई मरत है ।
बिंद के सधय्या ताहि हीज की बडय्या देत
बंदरा सदीव पाइ नागे ही फिरत है ।
अंगना अधीन काम क्रोध मै प्रबीन
एक गिआन के बिहीन छीन कैसे कै तरत है ।१।७१।

भूत बनचारी छित छउना सभै दुधाधारी
पउन के अहारी सु भुजंग जानीअतु है ।
त्रिण के भछय्या धन लोभ के तजय्या
ते तो गऊअन के जय्या ब्रिखभय्या मानीअतु है ।
नभ के उडय्या ताहि पंछी की बडय्या देत
बगुला बिड़ाल ब्रिक धिआनी ठानीअतु है।
जेतो बडे गिआनी तिनो जानी पै बखानी नाहि
ऐसे न प्रपंच मनि भूलि आनीअतु है ।२। ७२।

भूमि के बसय्या ताहि भूचरी कै जय्या कहै
नभ के उडय्या सो चिरय्या कै बखानीऐ ।
फल के भछय्या ताहि बांदरी के जय्या कहै
आदिस फिरय्या तेतो भूत के पछानीऐ ।
जल के तरय्या कौ गंगेरी सी कहत जग
आग के भछय्या सो चकोर सम मानीऐ ।
सूरज सिवय्या ताहि कउल की बडय्या देत
चंद्रमा सिवय्या कौ कवी कै पहिचानीऐ ।३।७३।

नाराइण कछ्छ मछ्छ तेंदूआ कहत सभ
कउलनाभि कउल जिह ताल मै रहतु है ।
गोपीनाथ गूजर गोपाल सबै धेनचारी
रिखीकेस नाम कै महंत लहीअत है ।
माधव भवर औ अटेरू कौ कनय्या नाम
कंस के बधय्या जमदूत कहीअतु है ।
मूड़ रूड़ि पीटत न गूड़ता कौ भेद पावै
पूजत न ताहि जा के राखे रहीअतु है ।४।७४।

बिस्वपाल जगत काल दीन दिआल बैरी साल
सदा प्रतिपाल जम जाल ते रहतु है ।
जोगी जटाधारी सती साचे बड़े ब्रहमचारी

धिआन काज भूख पिआस देह पै सहत है ।
निउली करम जल होम पावक पवन होम
अधो मुख एक पाइ ठाढे निबहत है ।
मानव फनिंद देव दानव न भावै भेद
बेद औ कतेब नेति नेति कै कहत है ।५।७५।

नाचत फिरत मोर बादर करत घोर
दामिनी अनेक भाउ करिओ ई करत है ।
चंद्रमा ते सीतल न सूरज के तपत तेज
इंद्र सौ न राजा भव भूमि कौ भरत है ।
सिव से तपसी आदि ब्रहमा से न बेदचारी
सनत कुमार सी तपसिआ न अनत है ।
गिआन के बिहीन काल फास के अधीन सदा
जुगन की चउकरी फिराए ई फिरत है ।६।७६।

एक सिव भए एक गए एक फेर भए
रामचंद्र क्रिसन के अवतार भी अनेक है ।
ब्रहमा अरु बिसनु केते बेद औ पुरान केते
सिंम्रिति समूहन के हुइ हुइ बितए है ।
मोनदी मदार केते असुनी कुमार केते
अंसा अवतार केते काल बसि भए है ।
पीर औ पिकाबर केते गने न परत एते
भूमि ही ते हुइ कै फेरि भूमि ही मिलए है ।७।७७।

जोगी जती ब्रहमचारी बडे बडे छत्रधारी
छत्र ही की छाइआ कई कोस लौ चलत है ।
बडे बडे राजन के दाबति फिरति देस
बडे बडे राजन के द्रप को दलतु है ।
मान से महीप अउ दिलीप कैसे छत्रधारी
बडो अभिमान भुज दंड को करत है ।
दारा से दलीसर दुरजोधन से मानधारी
भोगि भोगि भूमि अंति भूमि मै मिलत है ।८।७८।

सिजदे करे अनेक तोपची कपट भेस

पोसती अनेकदा निवावत है सीस कौ ।
कहा भइओ मल जौ पै काढत अनेक डंड
सो तौ न डंडौत असटांग अथितीस कौ ।
कहा भइओ रोगी जो पै डार्हियो रह्हयो उरधु मुखि
मन ते न मूंड निहुरायो आदि ईस कौ ।
कामना अधीन सदा दामना प्रबीन
एक भावना बिहीन कैसे पावै जगदीस कौ ।९।७९।

सीस पटकत जा के कान मै खजूरा धसै
मूंड छटकत मित्र पुत्र हूं के सोक सौ ।
आक को चरय्या फल फूल को भछय्या
सदा बन को भ्रमय्या अउर दूसरो न बोक सौ ।
कहा भयो भेड जउ घसत सीस ब्रिछन सौ
माटी को भछय्या बोल पूछ लीजै जोक सौ ।
कामना अधीन काम क्रोध मै प्रबीन
एक भावना बिहीन कैसे भेटै परलोक सौ ।१०।८०।

नाचिओ ई करत मोर दादर करत सोर
सदा घनघोर घन करिओ ई करत है ।
एक पाइ ठाढे सदा बन मै रहत ब्रिछ
फूकि फूकि पाव भूमि स्त्रावग धरत है ।
पाहन अनेक जुग एक ठउर बासु करै
काग अउर चील देसि देसि बिचरत है ।
गिआन के बिहीन महा दान मै न हूजै लीन
भावना बिहीन दीन कैसे कै तरत है ।११।८१।

जैसे एक स्वांगी कहूं जोगीआ बैरागी बनै
कहूं सनिआसि भेस बन कै दिखावई ।
कहूं पउनहारी कहूं बैठे लाइ तारी
कहूं लोभ की खुमारी सौ अनेक गुन गावई ।
कहूं ब्रहमचारी कहूं हाथ पै लगावे बारी
कहूं डंडधारी हुइ कै लोगन भ्रमावई ।
कामना अधीन परिओ नाचत है नाचन सो
गिआन के बिहीन कैसे ब्रहम लोक पावई ।१२।८२।

पंच बार गीदर पुकारे परे सीत काल
कुंचर अउ गदहा अनेकदा प्रकार ही ।
कहा भयो जो पै कलवत्र लीओ कासी बीच
चीरि चीरि चोरटा कुठारन सो मारही ।
कहा भइओ फासी डारि बूडिओ जड़ गंगधारि
डारि डारि फासि ठग मारि मारि डारही ।
डूबे नरक धारि मूड़ गिआन के बिना बिचार
भावना बिहीन कैसे गिआन को बिचारही ।१३।८३।

ताप के सहे ते जो पै पाईऐ अताप नाथ
तापना अनेक तन घाइल सहत है ।
जाप के कीए ते जो पै पायत अजाप देव
पूदना सदीव तुही तुही उचरत है ।
नभ के उडे ते जो पै नाराइण पाईयत
अनल अकास पंछी डोलबो करत है ।
आग मै जरे ते गति रांड की परत करि
पताल के बासी किउ भुजंग न तरत है ।१४।८४।

कोऊ भइओ मुंडीआ संनिआसी कोऊ जोगी भइओ
कोऊ ब्रहमचारी कोऊ जती अनुमनाबो ।
हिंदू तुरक कोऊ राफिजी इमाम साफी
मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ।
करता करीम सोई राजिक रहीम ओई
दूसरो न भेद कोई भूलि भ्रम मानबो ।
एक ही की सेव सभ ही को गुरदेव एक
एक ही सरूप सबै एकै जोति जानबो ।१५।८५।

देहुरा मसीत सोई पूजा औ निवाज ओई
मानस सबै एक पै अनेक को भ्रमाउ है ।
देवता अदेव जछ्छ गंध्रब तुरक हिंदू
निआरे निआरे देसन के भेस को प्रभाउ है ।
एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बान
खाक बाद आतिस औ आब को रलाउ है ।
अलह अभेख सोई पुरान अउ कुरान ओई

एक ही सरूप सबै एक ही बनाउ है ।१६।८६।
जैसे एक आग ते कनूका कोटि आगि उठै
निआरे निआरे हुइ कै फेरि आग मै मिलाहिंगे ।
जैसे एक धूरि ते अनेक धूरि पूरत है
धूरि के कनूका फेर धूरि ही समाहिंगे ।
जैसे एक नद ते तरंग कोटि उपजत है
पानि के तरंग सबै पानि ही कहाहिंगे ।
तैसे बिस्व रूप ते अभूत भूत प्रगट होइ
ताही ते उपजि सबै ताही मै समाहिंगे ।१७।८७।
केते कछ्छ मछ्छ केते उन कउ करत भछ्छ
केते अछ्छ बछ्छ हुइ सपछ्छ उड जाहिंगे ।
केते नभ बीच अछ्छ पछ्छ कउ करैंगे भछ्छ
केतक प्रतछ्छ हुइ पचाइ खाइ जाहिंगे ।
जल कहा थल कहा गगन के गउन कहा
काल के बनाए सबै काल ही चबाहिंगे ।
तेज जिउ अतेज मै अतेज जैसे तेज लीन
ताही ते उपजि सबै ताही मै समाहिंगे ।१८।८८।
कूकत फिरत केते रोवत मरत केते
जल मै डूबत केते आग मै जरत है ।
केते गंगबासी केते मदीना मक्का निवासी
केतक उदासी के भ्रमाए ई फिरत है।
करवत सहत केते भूमि मै गडत केते
सूआ पै चड़त केते दुख कउ भरत है ।
गैन मै उडत केते जल मै रहत केते
गिआन के बिहीन जकि जारे ई मरत है ।१९।८९।
सोधि हारे देवता बिरोध हारे दानो बडे
बोधि हारे बोधक प्रबोधि हारे जापसी ।
घसि हारे चंदन लगाइ हारे चोआ चार
पूज हारे पाहन चढाइ हारे लापसी ।
गाहि हारे गोरन मनाइ हारे मड़ी मट
लीप हारे भीतन लगाइ हारे छापसी ।
गाइ हारे गंध्रब बजाए हारे किंनर सभ
पचि हारे पंडित तपंति हारे तापसी ।२०।९०।
त्वप्रसादि । भुजंग प्रयात छंद
न रागं न रंगं न रूपं न रेखं । न मोहं न क्रोहं न द्रोहं न द्वैखम ।

न करमं न भरमं न जनमं न जातं । न मित्रं न सत्रं न पित्र न मातं ।१।९१।
न नेहं न गेहं न कामं न धामं । न पुत्रं न मित्रं न सत्रं न भामं ।
अलेखं अभेखं अजोनी सरूपं । सदा सिधिदा बुधिदा ब्रिधि रूपं ।२।९२।

नही जान जाई कछू रूप रेखं । कहा बास ताको फिरै कउन भेखं ।
कहा नाम ता को कहा कै कहावै । कहा कै बखानो कहै मो न आवै ।३।९३।

न रोगं न सोगं न मोहं न मातं । न करमं न भरमं न जनमं न जातं ।
अद्वैखं अभेखं अजोनी सरूपे । नमो एक रूपे नमो एक रूपे ।४।९४।

परेअं परा परम प्रगिआ प्रकासी । अछेदं अछै आदि अद्वै अबिनासी ।
न जातं न पातं न रूपं न रंगे । नमो आदि अभंगे नमो आदि अभंगे ।५।९५।

किते क्रिसन से कीट कोटै उपाए । उसारे गड़े फेरि मेटे बनाए ।
अगाधे अभै आदि अद्वै अबिनासी । परेअं परा परम पूरन प्रकासी ।६।९६।

न आधं न बिआधं अगाधं सरूपे । अखंडित प्रताप आदि अछे बिभूते ।
न जनमं न मरनं न बरनं न बिआधे । अखंडे प्रचंडे अदंडे असाधे ।७।९७।

न नेहं न गेहं सनेहं न साथे । उदंडे अमंडे प्रचंडे प्रमाथे ।
न जाते न पाते न सत्रे न मित्रे । सु भूते भविखे भवाने अचित्रे ।८।९८।

न रायं न रंकं न रूपं न रेखं । न लोभं न अछोभं अभूतं अभेखं ।
न सत्रं न मित्रं न नेहं न गेहं । सदैवं सदा सरब सरबत्र सनेहं ।९।९९।

न कामं न क्रोधं न लोभं न मोहं । अजोनी अछै आदि अद्वै अजोहं ।
न जनमं न मरनं न बरनं न बिआधं । न रोगं न सोगं अभै निरबिखाधं ।१०।१००।

अछेदं अभेदं अकरमं अकालं ।
अखडं अभंडं प्रचंडं अपालं ।
न तातं न मातं न जातं न कायं ।
न नेहं न गेहं न भरमं न भायं ।११।१०१।
न रूपं न भूपं न कायं न करमं ।
न त्रासं न प्रासं न भेदं न भरमं ।
सदैवं सदा सिधि ब्रिधं सरूपे ।
नमो एक रूपे नमो एक रूपे ।१२।१०२।

त्रिउकतं प्रभा आदि अनुकतं प्रतापे ।
अजुगतं अछै आदि अविकतं अथापे ।
बिभुगतं अछै आदि अछै सरूपे ।
नमो एक रूपे नमो एक रूपे ।१३।१०३।
न नेहं न गेहं न सोकं न साकं ।
परेअं पवित्रं पुनीतं अताकं ।
न जातं न पातं न मित्रं न मंत्रे ।
नमो एक तंत्रे नमो एक तंत्रे ।१४।१०४।
न धरमं न भरमं न सरमं न साके ।
न बरमं न चरमं न करमं न बाके ।

न सत्रं न मित्रं न पुत्रं सरूपे ।
नमो आदि रूपे नमो आदि रूपे ।१५।१०५।
कहूं कंज के मंज के भरमि भूले ।
कहूं रंक के राज के धरम अलूले ।
कहूं देस के भेस के धरम धामे ।
कहूं राज के साज के बाज तामे ।१६।१०६।

कहूं अछ्र के पछ्र के सिध साधे ।
कहूं सिध के बुधि के ब्रिध लाधे ।
कहूं अंग के रंग के संगि देखे ।
कहूं जंग के रंग के रंग पेखे ।१७।१०७।
कहूं धरम के करम के हरम जाने ।
कहूं धरम के करम के भरम माने ।
कहूं चारु चेसटा कहूं चित्र रूपं ।

कहूं परम प्रग्या कहूं सरब भूपं ।१८।१०८।

कहूं नेह ग्रेहं कहूं देह दोखं । कहूं अउखदी रोग के सोक सोखं ।
कहूं देव बिद्या कहूं दैत बानी । कहूं जछ्छ गंधब किंनर कहानी ।१९।१०९।
कहूं राजसी सातकी तामसी हो । कहूं जोग बिद्या धरे तापसी हो ।
कहूं रोग हरता कहूं जोग जुगतं । कहूं भूमि की भुगत मै भरम भुगतं ।२०।११०।

कहूं देव कंनिआ कहूं दानवी हो । कहूं जछ्छ बिदिआ धरे मानवी हो ।
कहूं राजसी हो कहूं राज कंनिआ ।कहूं स्त्रिसटि की प्रिसट की रिसट पंनिआ ।२१।१११।
कहूं बेद बिद्या कहूं बिओम बानी । कहूं कोक की काबि कथै कहानी ।
कहूं अद्र सारं कहूं भद्र रूपं । कहूं मद्र बानी कहूं छुद्र सरूपं ।२२।११२।

कहूं बेद बिदिआ कहूं काबि रूपं । कहूं चेसटा चार चित्रं सरूपं ।
कहूं परम पुरान को पार पावै । कहूं बैठि कुरान के गीत गावै ।२३।११३।
कहूं सुध सेखं कहूं ब्रहम धरमं । कहूं ब्रिध अवसथा कहूं बाल करमं ।
कहूं जुआ सरूपं जरा रहत देहं । कहूं नेह देहं कहूं तिआग ग्रेहं ।२४।११४।

कहूं जोग भोगं कहूं रोग रागं । कहूं रोग हरता कहूं भोग तिआगं ।
कहूं राज साजं कहूं राज रीतं । कहूं पूरण प्रगिआ कहूं परम प्रीतं ।२५।११५।
कहूं आरबी तोरकी पारसी हो । कहूं पहलवी पसतवी संसक्रिती हो ।
कहूं देस भाखिआ कहूं देव बानी । कहूं राज बिदिआ कहूं राजधानी ।२६।११६।

कहूं मंत्र बिदिआ कहूं तंत्र सारं । कहूं जंत्र रीतं कहूं ससत्र धारं ।
कहूं होम पूजा कहूं देव अरचा । कहूं पिंगुला चारणी गीत चरचा ।२७।११७।
कहूं बीन बिदिआ कहूं गान गीतं । कहूं मलेछ भाखिआ कहूं बेद रीतं ।
कहूं त्रित बिदिआ कहूं नाग बानी । कहूं गारड़ू ग़ूड़ कथे कहानी ।२८।११८।

कहूं अछ्छरा पछ्छरा मछ्छरा हो ।
कहूं बीर बिदिआ अभूतं प्रभा हो ।
कहूं छैल छाला धरे छत्रधारी ।
कहूं राज साजं धिराजाधिकारी ।२९।११९।
नमो नाथ पूरे सदा सिध दाता ।
अछेदी अछै आदि अद्वै बिधाता ।
न त्रसतं न ग्रसतं समसतं सरूपे ।
नमसतं नमसतं तुअसतं अभूते ।३०।१२०।

त्वप्रसादि । पापड़ी छंद

अब्यकत तेज अनभउ प्रकास । अछै सरूप अद्वै अनास ।
अनतुट तेज अनखुट भंडार । दाता दुरंत सरबं प्रकार ।१।१२१।
अनभूत तेज अनछिज गात । करता सदीव हरता सनात ।
आसन अडोल अनभूत करम । दाता दइआल अनभूत धरम ।२।१२२।

जिह सत्र मित्र नही जनम जाति । जिह पुत्र भ्रात नही मित्र मात ।
जिह करम भरम नही धरम धिआन । जिह नेह गेन नही बिओतबान ।३।१२३।
जिह जाति पाति नही सत्र मित्र । जिह नेह गेह नही चिहन चित्र ।
जिह रंग रूप नही राग रेख । जिह जनम जाति नही भरम भेख ।४।१२४।

जिह करम भरम नही जाति पाति । नही नेह गेह नही पित्र मात ।
जिह नाम थाम नही बरग बिआध । जिह रोग सोग नही सत्र साध ।५।१२५।
जिह त्रास वास नही देह नास । जिह आदि अंत नही रूप रासि ।
जिह रोग सोग नही जोग जुगति । जिह त्रास आस नही भूमि भुगत ।६।१२६।

जिह काल बिआल कटिओ न अंग । अछै सरूप अखै अभंग ।
जिह नेति नेति उचरंत बेद । जिह अलख रूप कथत कतेब ।७।१२७।
जिह अलख रूप आसन अडोल । जिह अमित तेज अछै अतोल ।
जिह धिआन काज मुनि जन अनंत । कई कलप जोग साधत दुरंत ।८।१२८।

तन सीत घाम बरखा सहंत । कई कलप एक आसन बितंत ।
कई जतन जोग बिदिआ बिचारि । साधंत तदपि पावत न पार ।९।१२९।

कई उरध बाह देसन भ्रमंत । कई उरध मध पाक झुलंत ।
कई सिम्रित सासत्र उचरंत बेद । कई कोक काबि कथत कतेब ।१०।१३०।

कई अगनिहोत्र कई पउन अहार । कई करत कोट म्रित को अहार ।
कई करत साक पै पत्र भछ्छ । नही तदपि देव होवत प्रतछ्छ ।११।१३१।

कई गीत गान गंध्रब रीति । कई बेद सासत्र बिदिआ प्रतीति ।
कहूं बेद रीति जग आदि करम । कहूं अगनिहोत्र कहूं तीरथ धरम ।१२।१३२।

कई देसि देसि भाखा रटंग । कई देसि देसि बिदिआ पड़ंत ।
कई करत भाति भातन बिचार । नही नेकु तासु पायत न पार ।१३।१३३।

कई तीरथ तीरथ भरमत सु भरम । कई अगनिहोत्र कई देव करम ।
कई करत बीर बिदिआ बिचार । नही तदपि तासु पायत न पार ।१४।१३४।

कहूं राजरीति कहूं जोग धरम । कई सिंम्रित सासत्र उचरत सुकरम ।
निउली आदि करम कहूं हसति दान । कहूं अस्वमेध मख को बखान ।१५।१३५।

कहूं करत ब्रहम बिदिआ बिचार । कहूं जोग रीति कहूं बिरधि चारि ।
कहूं करत जछ्छ गंधरब गान । कहूं धूप दीप कहूं अरघ दान ।१६।१३६।

कहूं पित्र करम कहूं बेद रीति । कहूं त्रित नाच कहूं गान गीत ।
कहूं करत सासत्र सिंम्रिति उचार । कई भजत एक पग निराधार ।१७।१३७।

कई नेह देह कई गेह वास । कई भ्रमत देस देसन उदास ।
कई जल निवास कई अगनि ताप । कई जपत उरध लटकंत जाप ।१८।१३८।

कई जपत जोग कलपं प्रजंत । नही तदपि तास पायत न अंत ।
कई करत कोट बिदिआ बिचार । नही तदपि दिसटि देखे मुरारि ।१९।१३९।

बिनु भगति सकति नही परत पान । बहु करत होम अरु जग दान ।
बिनु एक नामु इक चित लीन । फोकटो सरब धरमा बिहीन ।२०।१४०।

त्वप्रसादि । तोटक छंद

जै जंपहि जुगण जूह जुअं । भै कंपहि मेरु पयाल भुअं ।
तप तापस सरब जलेरु थलं । धंनि उचरत इंद्र कुमेर बलं ।१।१४१।

अनखेद सरूप अभेद अभिअं । अनखंड अभूत अछेद अछिअं ।
अनकाल अपाल दिआल असुअं । जिह ठटीअं मेर अकास भुअं ।२।१४२।

अनखंड अमंड प्रचंड नरं । जिह रचीअं देव अदेव बरं ।
सभ कीनी दीन जमीनु जमां । जिह रचीअं सरब मकीनु मकां ।३।१४३।

जिह राग न रूप न रेख रुखं । जिह ताप न साप न सोक सुखं ।
न रोग न सोग न भोग भुयं । जिह खेद न भेद न छेद छयं ।४।१४४।

जिह जाति न पाति न मात पितं । जिह रचीअं छत्री छत्र छितं ।
जिह राग न रेख न रोग भणं । जिह द्वैख न दाग न दोख गणं ।५।१४५।

जिह अंडह ते ब्रहमंड रचिओ । दस चार करी नव खंड सचिओ ।
रज तामस तेज अतेज कीओ । अनभउ पद आप प्रचंड लीओ ।६।१४६।

स्त्रिअ सिंधरु बिंध नगिंध नगं । स्त्रिअ जछ्छ गंध्रब फणिंद भुजं ।
रचि देव अदेव अभेव नगं । नरपाल त्रिपाल कराल त्रिगं ।७।१४७।

कई कीट पतंग भुजंग नरं । रचि अंडज सेतज उतभुजं ।
कीए देव अदेव सराध पितं । अनखंड प्रताप प्रचंड गतं ।८।१४८।

प्रभ जाति न पाति न जोति जुतं । जिह तात न मात न भ्रात सुतं ।
जिह रोग न सोग न भोग भुअं । जिह जंपहि किंनर जछ्छ जुअं ।९।१४९।

नर नारि नपुंसक जाहि कीए । गण किंनर जछ्छ भुजंग दीए ।
गज बाज रथादिक पाति गनं । भवि भूत भविख भवान तुअं ।१०।१५०।

जिह अंडज सेतज जेर रजं । रचि भूमि अकास पताल जलं ।
रचि पावक पउन प्रचंड बली । बनि जासु कीओ फल फूल कली ।११।१५१।

भूअ मेरु अकास निवास छितं । रचि रोज इकादस चंद ब्रितं ।
दुति चंद दिनीसर दीप दई । जिह पावक पउन प्रचंड मई ।१२।१५२।

जिह खंड अखंड प्रचंड कीए । जिह छत्रि उपाइ छिपाइ दीए ।
जिह लोक चतुरदास चारु रचे । नर गंध्रब देव अदेव सचे ।१३।१५३।

अनधूत अभूत अछूत मतं । अनगाधि अब्याधि अनादि गतं ।
अनखेद अभेद अछेद नरं । जिह चारु चतुरदिस चक्र फिरं ।१४।१५४।

जिह राग न रंग न रेख रुगं । जिह सोग न भोग न जोग जुगं ।
भूअ भंजन गंजन आदि सिरं । जिह बंदत देव अदेव नरं ।१५।१५५।

गण किंनर जछ्छ भुजंग रचे । मणि माणिक मोती लाल सचे ।
अनभंज प्रभा अनगंज ब्रितं । जिह पार न पावत पूर मतं ।१६।१५६।

अनखंड सरूप अडंड प्रभा । जै जंपत बेद पुरान सभा ।
जिह बेद कतेब अनंत कहै । जिह भूत अभूत न भेद लहै ।१७।१५७।

जिह बेद पुरान कतेब जपै । सुत सिंधु अधोमुख ताप तपै ।
कई कलपन लौ तप ताप करै । नही नैकु क्रिपानिधि पानि परै ।१८।१५८।

जिह फोकट धरम सभै तज है । इक चित क्रिपानिधि को भज है ।
तेऊ या भव सागर को तर है । भवि भूलि न देह पुनर धर है ।१९।१५९।

इक नाम बिना नही कोटि ब्रिती । इम बेद उचारत सारसुती ।
जोऊ वा रस के चसके रस है । तेऊ भूलि न काल फंधा फस है ।२०।१६०।

त्वप्रसादि । नराज छंद
अगंज आदि देव है अभंज भंज जानीऐ ।
अभूत भूत है सदा अगंज गंज मानीऐ ।
अदेव देव है सदा अभेव भेव नाथ है ।
समसत सिधि ब्रिधिदा सदीव सरब साथ है ।१।१६१।

अनाथ नाथ नाथ है अभंज भंज है सदा ।
अगंज गंज गंज है सदीव सिधि ब्रिधिदा ।
अनूप रूप सरूप है अछिज तेज मानीऐ ।
सदीव सिधि सुधि दा प्रताप पत्र जानीऐ ।२।१६२।

न राग रंग रूप है न रोग राग रेख है ।
अदोख अदाग अदग है अभूत अभ्रम अभेख है ।
न तात मात जाति है न पाति चिहन बरन है ।
अदेख असेख अभेख है सदीव बिसु भरन है ।३।१६३।

बिस्वंभर बिसुनाथ है बिसेख बिस्व भरन है ।
जिमी जमान के बिखै सदीव करम भरम है ।
अद्वैख है अभेख है अलेख नाथ जानीऐ ।
सदीव सरब ठउर मै बिसेख आन मानीऐ ।४।१६४।

न जंत्र मै न तंत्र मै न मंत्र बसि आवई ।
पुरान औ कुरान नेति नेति कै बतावई ।
न करम मै न धरम मै न भरम मै बताईऐ ।
अगंज आदि देव है कहो सु कैसि पाईऐ ।५।१६५।

जिंमी जमान के बिखै समसत एक जोति है ।
न घाट है न बाढ है न घाट बाढ होत है ।
न हान है न बान है समान रूप जानीऐ ।
मकीन अउ मकानि अप्रमान तेज मानीऐ ।६।१६६।

न देह है न गेह है न जाति है न पाति है ।
न मंत्रि है न मित्र है न तात है न मात है ।
न अंग है न रंग है न संग है न साथ है ।

न दोख है न दाग है न द्वैख है न देह है ।७।१६७।

न सिंघ है न स्यार है न राउ है न रंक है ।
न मान है न मौत है न साक है न संक है ।
न जछ्छ है न गंध्रब है न नरु है न नारि है ।
न चोर है न साह है न साह को कुमार है ।८।१६८।
न नेह है न गेह है न देह को बनाउ है ।
न छल है न छिद्र है न छल को मिलाउ है ।
न तंत्र है न मंत्र है न जंत्र को सरूप है ।
न राग है न रंग है न रेख है न रूप है ।९।१६९।

न जंत्र है न मंत्र है न तंत्र को बनाउ है ।
न छल है न छिद्र है न छाइआ को मिलाउ है ।
न राग है न रंग है न रूप है न रेख है ।
न करम है न धरम है अजनम है अभेख है ।१०।१७०।
न तात है न मात व अख्याल अखंड रूप है ।
अछेद है अभेद है न रंक है न भूप है ।
परे है पवित्र है पुनीत है पुरान है ।
अगंज है अभंज है करीम है कुरान है ।११।१७१।
अकाल है अपाल है खिआल है अखंड है ।
न रोग है न सोग है न भेद है न भंड है ।
न अंग है न रंग है न संग है न साथ है ।
प्रिया है पवित्र है पुनीत है प्रमाथ है ।१२।१७२।
न सीत है न सोक है न घ्राम है न घाम है ।
न लोभ है न मोह है न क्रोध है न काम है ।
न देव है न दैत है न नर को सरूप है ।
न छल है न छिद्र है न छिद्र की बिभूत है ।१३।१७३।
न काम है न क्रोध है न लोभ है न मोह है ।
न द्वैख है न भेख है न दुई है न द्रोह है ।
न काल है न बाल है सदीव दिआल रूप है ।
अगंज है अभंज है अभरम है अभूत है ।१४।१७४।

अछेद छेद है सदा अगंज गंज गंज है ।
अभूत भेख है बली अरूप राग रंग है ।
न द्वैख है न भेख है न काम क्रोध करम है ।

न जाति है न पाति है न चित्र चिहन बरन है ।१५।१७५।
बिअंत है अनंत है अनंत तेज जानीऐ ।
अभूमि अभिज है सदा अछिज तेज मानीऐ ।
न आधि है न बिआधि है अगाध रूप लेखीऐ ।
अदोख है अदाग है अछै प्रताप पेखीऐ ।१६।१७६।

न करम है न भरम है न धरम को प्रभाउ है ।
न जंत्र है न तंत्र है न मंत्र को रलाउ है ।
न छल है न छिद्र है न छिद्र के सरूप है ।
अभंग है अनंग है अगंज सी बिभूति है ।१७।१७७।

न काम है न क्रोध है न लोभ मोह कार है ।
न आधि है न गाध है न बिआध को बिचार है ।
न राग रंग रूप है न रूप रेख रार है ।
न हाउ है न भाउ है न दाउ को प्रकार है ।१८।१७८।

गजाधपी नराधपी करंत सेव है सदा ।
सितसपती तपसपती बनसपती जपस सदा ।
अगसत आदि जे बड़े तपसपती बिसेखीऐ ।
बिअंत बिअंत बिअंत को करंत पाठ पेखीऐ ।१९।१७९।

अगाध आदि देव की अनादि बात मानीऐ ।
न जाति पाति मंत्रि मित्र सत्र सनेह जानीऐ ।
सदीव सरब लोक को क्रिपाल खिआल मै रहै ।
तुरंत द्रोह देह के अनंत भाति सो दहै । २०।१८०।

त्वप्रसादि । रूआमल छंद
रूप राग न रेख रंग न जनम मरन बिहीन ।
आदि नाथ अगाध पुरख सु धरम करम प्रबीन ।
जंत्र मंत्र न तंत्र जा को आदि पुरुख अपार ।
हसति कीट बिखै बसै सब ठउर मै निरधार ।१।१८१।

जाति पाति न तात जा को मंत्र मात न मित्र ।
सरब ठउर बिखै रमिओ जिह चक्र चिहन न चित्र ।
आदि देव उदार मूरति अगाध नाथ अनंत ।

आदि अंति न जानीऐ अबिखाद देव दुरंत ।२।१८२।
देव भेव न जानही जिस मरम बेद कतेब ।
सनक अउ सनकेसु नंदन पावही न हसेब ।
जछ्छ किंनर मछ्छ मानस मुरग उरग अपार ।
नेति नेति पुकारही सिव सक्र औ मुखचार ।३।१८३।

सरब सपत पतार के तरि जापही जिह जाप ।
आदि देव अगाधि तेज अनादि मूरति अताप ।
जंत्र मंत्र न आवई करि तंत्र मंत्र न कीन ।
सरब ठउर रहिओ बिराज धिराज राज प्रबीन ।४।१८४।

जछ गंध्रब देव दानो न ब्रहम छत्रीअन माहि ।
बैसनं के बिखै बिराजै सूद्र भी वह नाहि ।
गूड़ गउड न भील भी कर ब्रहम सेख सरूप ।
राति दिवस न मध उरध न भूमि अकास अनूप ।५।१८५।

जाति जनम न काल करम न धरम करम बिहीन ।
तीरथ जात्र न देव पूजा गोर के न अधीन ।
सरब सपत पतार के तरि जानीऐ जिह जोति ।
सेस नाम सहंसफनि नहि नेत पूरन होत ।६।१८६।

सोधि सोधि हटे सभै सुर बिरोध दानव सरब ।
गाइ गाइ हटे गंध्रब गवाइ किंनर गरब ।
पड़त पड़त थके महा कबि गड़त गाड़ अनंत ।
हार हार कहिओ सभू मिलि नाम नाम दुरंत ।७।१८७।

बेद भेद न पाइओ लखिओन सेब कतेब ।
देव दानो मूड़ मानो जछ्छ न जानै जेब ।
भूत भब भवान भूपति आदि नाथ अनाथ ।
अगनि बाइ जले थले महि सरब ठउर निवास ।८।१८८।

देह गेह न नेह सनेहि अबेह नाक अजीत ।
सरब गंजन सरब भंजन सरब ते अनभीत ।
सरब करता सरब हरता सरब दयाल अद्वैख ।

चक्र चिहन न बरन जा को जाति पाति न भेख ।९।१८९।
रूप रेख न रंग जा को राग रूप न रंग ।
सरब लाइक सरब घाइक सरब ते अनभंग ।
सरब दाता सरब गिआता सरब को प्रतिपाल ।
दीनबंधु दयाल सुआमी आदि देव अपाल ।१०।१९०।

दीनबंधु प्रबीन स्त्रीपति सरब को करतार ।
बरन चिहन न चक्र जाको चक्र चिहन अकार ।
जाति पाति न गोत्र गाथा रूप रेख न बरन ।
सरब दाता सरब ग्याता सरब भूअ को भरन ।११।१९१।

दुसट गंजन सत्र भंजन परम पुरुख प्रमाथ ।
दुसट हरता स्त्रिसट करता जगत मै जिह गाथ ।
भूत भब भविख भवान प्रमान देव अगंज ।
आदि अंत अनादि स्त्रीपति परम पुरुख अभंज ।१२।१९२।

धरम के अन क्रम जेतक कीन तउन पसार ।
देव अदेव गंधरब किंनर मछ्छ कछ्छ अपार ।
भूमि अकास जले थले महि मानीऐ जिह नामु ।
दुसट हरता पुसट करता स्त्रिसटि हरता काम ।१३।१९३।

दुसट हरना स्त्रिसट करना दयाल लाल गोबिंद ।
मित्र पालक सत्र घालक दीन दयाल मुकंद ।
अघउ डंडण दुसट खंडण काल हूं के काल ।
दुसट हरणं पुसट करणं सरब के प्रतिपाल ।१४।१९४।

सरब करता सरब हरता सरब के अनकाम ।
सरब खंडण सरब दंडण सरब के निज भाम ।
सरब भुगता सरब जुगता सरब करम प्रबीन ।
सरब खंडण सरब दंडण सरब करम अधीन ।१५।१९५।

सरब सिंम्रितन सरब सासत्रन सरब बेद बिचार ।
दुसट हरता बिस्व भरता आदि रूप अपार ।
दुसट दंडण पुसट खंडण अदि देव अखंड ।

भूमि अकास जले थले महि जपत जाप अमंड ।१६।१९६।
स्त्रिसटचार बिचार जेते जानीऐ सबिचार ।
आदि देव अपार स्त्री पति दुसट पुसट प्रहार ।
अंन दाता ग्यान गिआता स्त्रब मान महिंद्र ।
बेद बिआस करे कई दिन कोटि इंद्र उपिंद्र ।१७।१९७।

जनम जाता करम ग्याता धरम चारु बिचार ।
बेद भेव न पावई सिव रुद्र अउ मुखचार ।
कोटि इंद्र उपइंद्र बिआस सनक सनत कुमार ।
गाइ गाइ थके सभे गुन चक्रत भे मुखचार ।१८।१९८।

आदि अंति न मध जा को भूत भब भवान ।
सति दुआपर त्रितीआ कलिजुग चत्र काल प्रधान ।
धिआइ धिआइ थके महा मुन गाइ गंध्रब अपार ।
हारि हारि थके सभै नही पाईऐ तिह पार ।१९।१९९।

नारद आदिक बेद बिआसक मुनि महान अनंत ।
धिआइ धिआइ थके सभै करि कोटि कसट दुरंत ।
गाइ गाइ थके गंध्रब नारि अपछ्र अपार ।
सोधि सोधि थके महा सुर पाइओ नहि पार ।२०।२००।

त्वप्रसादि । दोहरा

एक समे स्त्री आतमा उचरिओ मति सिउ बैन ।
सभ प्रताप जगदीस को कहहु सकल बिधि तैन ।१।२०१।
को आतमा सरूप है कहा स्त्रिसटि को बिचार ।
कउन धरम को करम है कहहु सकल बिसथार ।२।२०२।
कहा जीतब कहा मरन है कवन सुरग कहा नरक ।
को सुघड़ा को मूड़ता कहा तरक अवतरक ।३।२०३।

को निंदा जस है कवन कवन पाप कहा धरम ।
कवन जोग को भोग है कवन करम अपकरम ।४।२०४।
कहहु सुस्त्रम का सो कहहि दम को कहा कहंत ।
को सूर दाता कवन कहहु तंत को मंत ।५।२०५।
कहा रंक राजा कवन हरख सोग है कवन ।

को रोगी रागी कवन कहहु ततु मुहि तवन ।६।२०६।

कवन रिसट को पुसट है कहा स्रिसट को बिचार ।
कवन ध्रिसट को भ्रिसट है कहो सकल बिसथार ।७।२०७।
कहा करम को करम है कहा भरम को नास ।
कहा चितन की चेसटा कहा अचेत प्रकास ।८।२०८।

कहा नेम संजम कहा कहा गिआन अगिआन ।
को रोगी सोगी कवन कहा धरम की हानि ।९।२०९।

को सूर सुंदर कवन कहो जोग को सार ।
को दाता गिआनी कवन कहो बिचार बिचारि ।१०।२१०।

त्वप्रसादि । दीघर त्रिभंगी छंद

दुरजन दल दंडण असुर बिहंडण दुसट निकंदण आदि ब्रिते ।
चछरासुर मारण पतित उधारण नरक निवारण गूड़ गते ।
अछे अखंडे तेज प्रचंडे खंड उदंडे अलख मते ।
जै जै होसी महिखासुरि मरदन रंम कपरदन छत्र छिते ।१।२११।

आसुरी बिहंडण दुसट निकंदण पुसट उदंडण रूप अते ।
चंडासुर चंडण मुंड बिहंडण धूम्र बिधुंसण महिख मते ।
दानव प्रहारन नरक निवारन अधम उधारन उरध अधे ।
जै जै होसी महिखासुर मरदन रंम कपरदन आदि ब्रिते ।२।२१२।

डावरू डवंकै बबर बवंकै भुजा फरंकै तेज बरं ।
लंकुड़ीआ फाधै आयुध बाधै सैन बिमरदन काल असुरं ।
असटायुध चमकै भूखन दमकै अति सित झमकै फंक फंणं ।
जै जै होसी महिखासुर मरदन रंम कपरदन दैत जिणं ।३।२१३।

चंडासुर चंडण मुंड बिमुंडण खंड अखंडण खून खिते ।
दामिनी दमंकण धुजा फरंकण फणी फुंकारण जोध जिते ।
सर धार बिबरखण दुसट प्रकरखण पुसट प्रहरखण दुसट मथे ।
जै जै होसी महिखासुर मरदन भूमि आकास तल उरध अधे ।४।२१४।

दामिनी प्रहासन सुछबि निवासन स्त्रिसटि प्रकासन गूड़ गते ।
रकतासुर आचन जुध प्रमाचन त्रिदै नराचन धरम ब्रिते ।
स्त्रोणंत अचिंती अनल बिवंती जोग जयंती खड़ग धरे ।
जै जै होसी महिखासुर मरदन पाप बिनासन धरम करे ।५।२१५।

अघ ओघ निवारन दुसट प्रजारन स्त्रिसटि उबारन सुध मते ।
फणीअर फुंकारन बाघ बुकारण ससत्र प्रहारण साध मते ।
सैहथी सनाहनि असट प्रबाहन बोल निबाहन तेज अतुलं ।
जै जै होसी महिखासुर मरदन भूमि अकास पताल जलं ।६।२१६।

चाचरि चमकारन छिछुर हारन धूम धुकारन द्रप मथे ।
दाड़वी प्रदंते जोग जयंते मनुज मथंते गूड़ कथे ।
करम प्रणासन चंद प्रकासन सूरज प्रतेजन असटभुजे ।
जै जै होसी महिखासुर मरदन भरम बिनासन धरम धुजे ।७।२१७।

घुंघरू घमंकण ससत्र झमंकण फणीअर फुंकारण धरम धुजे ।
असटाट प्रहासन स्त्रिसटि निवासन दुसट प्रणासन चक्र गते ।
केसरी प्रवाहे सुध सनाहे अगम अथाहे एक ब्रिते ।
जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि कुमारि अगाध ब्रिते ।८।२१८।

सुर नर मुनि बंदन दुसट निकंदन भ्रिसट बिनासन म्रित मथे ।
कावरू कुमारे अधम उधारे करन निवारे आदि कथे ।
किंकणी प्रसोहणि सुर नर मोहणि सिंघारोहणि बितल तले ।
जै जै होसी सभ ठउरि निवासन बाइ पताल अकास अनले ।९।२१९।

संकटी निवारण अधम उधारण तेज प्रकरखण तुंद तबे ।
दुख दोख दहंती जुआल जयंती आदि अनदि अगाध अछे ।
सुधता समरपण तरक बितरकण तपत प्रतापण जपत जिवै ।
जै जै होसी ससत्र प्रकरखण आदि अनील अगाधि अभै ।१०।२२०।

चंचला चखंगी अलक भुजंगी तुंद तुरंगण तिछ सरे ।
करकसा कुठारे नरक निवारे अधम उधारे तूर भजे ।
दामिनी दमंके केहरि लंके आदि अतंके कूर कथे ।
जै जै होसी रकतासुर खंडण सुंभ चक्रतन निसुंभ मथे ।११।२२१।

बारिज बिलोचन ब्रितन बिमोचन सोच बिसोचन कउच कसे ।
दामिनी प्रहासे सुक सर नासे सुब्रित सुबासे दुसट ग्रसे ।
चंचला प्रिअंगी बेद प्रसंगी तेज तुरंगी खंड असुरं ।
जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि अनादि अगाधि उरधं ।१२।२२२।

घंटका बिराजै रुणझुण बाजै भ्रम भै भाजै सुनत सुरं ।
कोकिल सुनि लाजै किलबिख भाजै सुख उपराजै मधि उरं ।
दुरजन दल दझै मन तन रिझै सभै न भजै रोहरणं ।
जै जै होसी महिखासुर मरदन चंड चक्रतन आदि गुरं ।१३।२२३।

चाचरी प्रजोधन दुसट बिरोधन रोस अरोधन कूर ब्रिते ।
धूम्राछ बिधुंसन प्रलै प्रजुंसन जगि बिधुंसन सुध मते ।
जालपा जयंती सत्र मथंती दुसट प्रदाहन गाड़ मते ।
जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि जुगादि अगाधि गते ।१४।२२४।

खत्रिआणि खतंगी अभै अभंगी आदि अनंगी अगाधि गते ।
ब्रिड़लाछ बिहंडण चछ्छर दंडण तेज प्रचंडण आदि ब्रिते ।
सुर नर प्रतिपारण पतित उधारण दुसट निवारण दोख हरे ।
जै जै होसी महिखासुर मरदन बिस बिधुंसन स्त्रिसटि करे ।१५।२२५।

दामिनी प्रकासे उनत नासे जोति प्रकासे अतुल बले ।
दानवी प्रकरखण सर वर वरखण दुसट प्रधरखण बितल तले ।
असटायुध बाहण बोल निबाहण संत पनाहण गूड़ गते ।
जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि अनादि अगाधि ब्रिते ।१६।२२६।

दुख दोख प्रभछ्छण सेवक रछ्छण संत प्रतछ्छण सुध सरे ।
सारंग सनाहे दुसट प्रदाहे अरि दल गाहे दोख हरे ।
गंजन गुमाने अतुल प्रवाने संति जमाने आदि अंते ।
जै जै होसी महिखासुर मरदन साध प्रदछ्छन दुसट हंते ।१७।२२७।

कारण करीली गरब गहीली जोति जितीली तुंद मते ।
असटाइध चमकण ससत्र झमकण दामिनी दमकण आदि ब्रिते ।
डुकडुकी डमंकै बाघ बबंकै भुजा फरंकै सुध गते ।
जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि जुगाधि अनादि मते । १८।२२८।

चछरासुर मारण नरक निवारण पतित उधारण एक भटे ।
पापान बिहंडन दुसट प्रचंडण खंड अखंडण काल कटे ।
चंद्रानन चारै नरक निवारै पतित उधारै मुंड मथे ।
जै जै होसी महिखासुर मरदन धुम्र बिधुंसन आदि कथे ।१९।२२९।

रकतासुर मरदन चंड चक्रदन दानव अरदन बिड़ाल बधे ।
सर धार बिबरखण दुरजन धरखण अतुल अमरखण धरम धुजे ।
धूम्राछ बिधुंसन स्त्रोणत चुंसन सुंभ निपात निसुंभ मथे ।
जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि अनील अगाधि कथे ।२०।२३०।

त्वप्रसादि । पाधड़ी छंद

तुम कहो देव सरबं बिचार । जिम कीओ आपि करते पसार ।
जदपि अभूत अनभै अनंत । तउ कहो जथा मति त्रैण तंत ।१।२३१।

करता करीम कादिर क्रिपाल । अद्वै अभूत अनभै दिआल ।
दाता दुरंत दुख दोख रहत । जिह नेति नेति सभ बेद कहत ।२।२३२।

कई ऊच नीच कीनो बनाउ । सभ वार पार जा को प्रभाउ ।
सभ जीव जंत जानंत जाहि । मन मूड़ किउ न सेवंत ताहि ।३।२३३।

कई मूड़ पत्र पूजा करंत । कई सिध साधु सूरज सिवंत ।
कई पलटि सूरज सिजदा कराइ । प्रभ एक रूप द्वै कै लखाइ ।४।२३४।

अनछिज तेज अनभै प्रकास । दाता दुरंत अद्वै अनास ।
सभ रोग सोग ते रहत रूप । अनभै अकाल अछै सरूप ।५।२३५।

करुणा निधान कामिल क्रिपाल । दूख दोख हरत दाता दिआल ।
अंजन बिहीन अनभंज नाथ । जल थल प्रभाउ सरबत्र साथ ।६।२३६।

जिह जाति पाति नही भेद भरम । जिह रंग रूप नही एक धरम ।
जिह सत्र मित्र दोऊ एक सार । अछै सरूप अबिचल अपार । ७।२३७।

जानी न जाइ जिह रूप रेख । कहि बासु तासु कहि कउनु भेख ।
कहि नाम तासु है कवन जाति । जिह सत्र मित्र नही पुत्र भ्रात ।८।२३८।

करुणा निधान कारण सरूप । जिह चक्र चिहन नही रंग रूप ।
जिह खेद भेद नही करम काल । सभ जीव जंत की करत पाल ।९।२३९।

उरधं बिरहत सिध सरूप । बुधं अपाल जुधं अनूप ।
जिह रूप रेख नही रंग राग । अनछिज तेज अनभिज अदाग ।१०।२४०।

जल थल महीप बन तन दुरंत । जिह नेति नेति निसि दिन उचरंत ।
पाइओ न जाइ जिह पैरि पार । दीनान दोख दहिता उदार ।११।२४१।

कई कोटि इंद्र जिह पानिहार । कई कोटि रुद्र जुगीआ दुआर ।
कई बेद बिआस ब्रहमा अनंत । जिह नेति नेति निसि दिन उचरंत ।१२।२४२।

त्वप्रसादि । स्वैये

दीनिन की प्रतिपाल करै नित संत उबारि गनीमन गारै ।
पछ्छ पसू नग नाग नराधिप सरब समै सभ को प्रतिपारै ।
पोखत है जल मै थल मै पल मै कलि के नही करम बिचारै।
दीन दइआल दइआनिधि दोखन देखत है परु देत न हारै ।१।२४३।

दाहत है दुख दोखन कौ दल दुजन के पल मै दल डारै ।
खंड अखंड प्रचंड प्रहारन पूरन प्रेम की प्रीति संभारै ।
पारु न पाइ सकै पदमापति बेद कतेब अभेद उचारै ।
रोज ही राज बिलोकत राजिक रोखि रूहान की रोजी न टारै ।२।२४४।

कीट पतंग कुरंग भुजंगम भूत भविख्ख भवान बनाए ।
देव अदेव खपे अहंमेव न भेव लखिओ भ्रम सिउ भरमाए ।
बेद पुरान कतेब कुरान हसेब थके कर हाथि न आए ।
पूरन प्रेम प्रभाउ बिना पति सिउ किन स्त्री पदमापति पाए ।३।२४५।

आदि अनंत अगाधि अद्वैख सु भूत भविख्ख भवान अभै है ।
अंति बिहीन अनातम आप अदाग अदोख अछिद्र अछै है ।
लोगन के करता हरता जल मै थल मै भरता प्रभ वै है ।
दीन दइआल दइआ कर स्त्रीपति सुंदर स्त्री पदमापति ए है ।४।२४६।

काम न क्रोध न लोभ न मोह न रोग न सोग न भोग न भै है ।
देह बिहीन सनेह सभो तन नेह बिरकत अगेह अछै है ।
जान को देत अजान को देत जमीन को देत जमान को दै है ।
काहे को डोलत है तुमरी सुधि सुंदर स्त्री पदमापति लै है ।५।२४७।

रोगन ते अरु सोगन ते जल जोगन ते बहु भाति बचावै ।
सत्र अनेक चलावत घाव तऊ तनि एकु न लागन पावै ।
रा़खत है अपनो करु दै करि पाप सबूह न भेटन पावै ।
और की बात कहा कह तोसौ सु पेट ही के पट बीच बचावै ।६।२४८।

जछ्छ भुजंग सु दानव देव अभेव तुमै सभ ही करि धिआवै ।
भूमि अकास पताल रसातल जछ्छ भुजंग सभै सिर निआवै ।
पाइ सकै नही पार प्रभा हूं को नेति ही नेतह बेद बतावै ।
खोज थकै सभ ही खुजीआ सुर हार परे हरि हाथि न आवै ।७।२४९।

नारद से चतुरानन से रुमनारिख से सभहूं मिलि गाइओ ।
बेद कतेब न भेद लखिओ सभ हारि परे हरि हाथि न आइओ ।
पाइ सकै नही पार उमापति सिध सनाथ सनंतन धिआइओ ।
धिआन धरो तिह को मन मै जिह को अमितोज सभै जगि छाइओ ।८।२५०।

बेद पुरान कतेब कुरान अभेद त्रिपान सभै पचिहारे ।
भेद न पाइ सकिओ अनभेद को खेदत है अनछेद पुकारे ।
राग न रूप न रेख न रंग न साक न सोग न संग तिहारे ।
आदि अनादि अगाधि अभेख अद्वैख जपिओ तिन ही कुल तारे ।९।२५१।

तीरथ कोट कीए इसनान दीए बहु दान महा ब्रत धारे ।
देस फिरिओ कर भेस तपोधन केस धरे न मिले हरि पिआरे ।
आसन कोटि करे असटांग धरे बहु निआस करे मुख कारे ।
दीन दइआल अकाल भजे बिनु अंत को अंत के धाम सिधारे ।१०।२५२।

त्वप्रसादि । कबितु

अत्र के चलय्या छित्र छत्र के धरय्या
छत्रधारीओ के छलय्या महा सत्रन के साल हैं ।
दान के दिवय्या महा मान के बढय्या
अवसान के दिवय्या हैं कटय्या जम जाल हैं।

जुध के जितय्या अउ बिरुध के मिटय्या
महा बुधि के दिवय्या महा मान हूं के मान हैं ।
गिआन हूं के गिआता महा बुधिता के दाता देव
काल हूं के काल महा काल हूं के काल हैं ।१।२५३।
पूरबी न पार पावै हिंगुला हिमाले धिआवै
गोरि गरदेजी गुन गावै तेरे नाम हैं ।
जोगी जोग साधै पउन साधना कितेक बाधै
आरब के आरबी अराधे तेरे नाम हैं ।
फरां के फिरंगी मानै कंधारी कुरैसी जानै पछ्छम के पछ्छमी पछानै निज काम हैं ।
मरहटा मघेले तेरी मन सो तपसिआ करै द्रिड़वै तिलंगी पहचाने धरम धाम हैं ।२।२५४।

बंग के बंगाली फिरहंग के फिरंगा वाली
दिल्ली के दिलवाली तेरी आगिआ मै चलत हैं ।
रोह के रुहेले माघ देस के मघेले बीर
बंगसी बुंदेले पाप पुंज को मलत हैं ।
गोखा गुन गावै चीन मचीन के सीस न्यावै
तिबती धिआइ दोख देह के दलत हैं ।
जिनै तोहि धिआइओ तिनै पूरन प्रताप पाइओ
सरब धन धाम फल फुल सो फलत हैं ।३।२५५।

देव देवतान कौ सुरेस दानवान कौ
महेस गंग धान कौ अभेस कहीअतु हैं ।
रंग मै रंगीन राग रूप मै प्रबीन
और काहूं पै न दीन साध अधीन कहीअतु हैं ।
पाईऐ न पारु तेज पुंज मै अपार
सरब बिदिआ के उदार हैं अपार कहीअतु हैं ।
हाथी की पुकार पल पाछे पहुंचत ताहि
चीटी की चिंघार पहिले ही सुनीअतु हैं ।४।२५६।

केते इंद्र दुआरा केते ब्रहमा मुखचार
केते क्रिसन अवतार केते राम कहीअतु हैं ।
केते ससि रासी केते सूरज प्रकासी
केते मुंडीआ उदासी जोग दुआर दहीअतु हैं ।
केते महादीन केते बिआस से प्रबीन केते कुमेर कुलीन केते जछ्छ कहीअतु हैं ।
करते है बीचार पै न पूरन को पावै पार ताही ते अपार निराधार लहीअतु हैं ।५।२५७।

पूरन अवतार निराधार है न पारावार
पाईऐ न पार पै अपार कै बखानीऐ ।
अद्वै अबिनासी परम पूरन प्रकासी
महा रूप हूं के रासी है अनासी कै कै मानीऐ ।
जंत्र हूं न जाति जा की बाप हूं न माइ ता की पूरन प्रभा की सु छटा कै अनुमानीऐ ।
तेज हूं को तंत्र है कि राजसी को जंत्र है मोहनी को मंत्र है निजंत्र कै कै जानीऐ ।६।२५८।

तेज हूं को तरु है कि राजसी को सरु है
सुधता को घरु है कि सिधता की सारु है।
कामना की खान है कि साधना दी सान है
बिरकतता की बान है कि बुधि को उदार है ।
सुंदर सरूप है कि भूपन को भूप है कि रूप हूं को रूप है कुमति को प्रहारु है ।
दीनन को दाता है गनीमन को गारक है साधन को रछ्छक है गुनन को पहारु है ।७।२५९।

सिधि को सरूप है कि बुधि को बिभूति है
कि क्रुध को अभूत है कि अछै अबिनासी है।
काम को कुनिंदा है कि खूबी को दिहिंदा है
गनीमन गिरिंदा है कि तेज को प्रकासी है ।
काल हूं के काल है कि सत्रन के साल है कि मित्रन को पोखत है कि ब्रिधता के बासी है ।
जोग हूं को जंत्र है कि तेज हूं को तंत्र है कि मोहनी को मंत्र है कि पूरन प्रकासी है ।८।२६०।

रूप को निवास है कि बुधि को प्रकास है
कि सिधता को बास है कि बुधि हूं के घरु है ।
देवन को देव है निरंजन अभेव है
अदेवन को देव है कि सुधता को सरु है ।
जान को बचय्या है इमान को दिवय्या है जमजाल को कटय्या है कि कामना को कर है ।
तेज को प्रचंड है अखंडण को खंड है महीपन को मंड है कि इसत्री है न नरु है ।९।२६१।

बिस्व को भरन है अपदा को हरन है
कि सुख को करन है कि तेज को प्रकास है ।
पाईऐ न पार पारावार हूं को पार जा को

कीजत बिचार सु बिचार को निवास है ।
हिंगुला हिमालै गावै अबसी हलबी धिआवै पूरबी न पार पावै आसा ते अनास है ।
देवन को देव महादेव हूं के देव है निरंजन अभेव नाथ अद्वै अबिनासि है ।१०।२६२।

अंजन बिहीन है निरंजन प्रबीन है
कि सेवक अधीन है कटय्या जम काल के ।
देवन के देव महादेव हूं के देव नाथ
भूमि के भुजय्या है कि मुहीय्या महा बाल के ।
राजन के राजा महा साज हूं के साजा
महा जोग हूं के जोग है धरय्या द्रम छाल के ।
कामना के कर है कुबुधिता को हर है
कि सिधता के साथी है कि काल है कुचाल के ।११।२६३।

छीर कैसी छीरावधि छाछ कैसी छत्रानेर
छपाकर कैसी छबि कालइंद्र के कूल कै ।
हंसनी सी सीहा रूम हीरा सी हुसैनाबाद
गंगा कैसी धार चली सात सिंध रूल कै ।
पारा सी पलाऊगढ रूपा कैसी रामपुर सोरा सी सुरंगाबाद नीके रही झूल कै ।
चंपा सी चंदेरी कोट चांदनी सी चांदागड़ि कीरति तिहारी रही मालती सी फूल कै ।१२।२६४।

फटक सी कैलास कमाऊगड़ कासीपुर
सीसा सी सुरंगाबादि नीकै सोहीअतु है ।
हिमा सी हिमालै हर हार सी हलबानेर
हंस कैसी हाजीपुर देखे मोहीअतु है ।
चंदन सी चंपावती चंद्रमा सी चंद्रागिर
चांदनी सी चांदगड़ जउन जोहीअतु है ।
गंगा सम गंग धारि बकानि सी बिलंदाबादि
कीरति तिहारी की उजीआरी सोहीअतु है । १३।२६५।

फरासी फिरंगी फरासीस के दुरंगी
मकरान के म्रिदंगी तेरे गीत गाईअतु है ।
भखरी कंधारी गोरि गखरी गरदेजाचारी
पउन के अहारी तेरे नामु धिआईअतु है ।
पूरब पलाऊ कामरूप अउ कमाऊ सरब ठउर मै बिराजै जहा जहा जाईअतु है ।

पूरन प्रतापी जंत्र मंत्र ते अतापी नाथ कीरति तिहारी को न पार पाईअतु है । १४।२६६।

त्वप्रसादि । पाधड़ी छंद

अद्वै अनास आसन अडोल । अद्वै अनंत उपमा अतोल ।
अछै सरूप अब्यकत नाथ । आजानबाहु सरबा प्रमाथ । १।२६७।
जह तह महीप बन तिन प्रफुल । सोभा बसंत जह तह प्रजुल ।
बन तन दुरंत खग म्रिग महान । जह तह प्रफुल सुंदर सुजान ।२।२६८।

फुलतं प्रफुल लहिलहत मउर । सिरि ढुलहि जानु मनमथह चउर ।
कुदरति कमाल राजिक रहीम । करुणानिधान कामिल करीम ।३।२६९।
जह तह बिलोकि तह तह प्रसोह । आजानुबाहु अमितोज मोह ।
रोसं बिरहत कुरुणानिधान । जह तह प्रफुल सुंदर सुजान ।४।२७०।

बन तिन महीप जल थल महान । जह तह प्रसोह करुणानिधान ।
जगमगत तेज पूरन प्रताप । अंबर जमीन जिह जपत जाप ।५।२७१।
सातो अकाल साति पतार । बिथरिओ अद्रिसट जिह करम जार । ६।२७२।